ग्रामविकास एवं एसफोर्ड

ग्रामविकास ग्रामीण परिवेश में परिवर्तन का कारण एवं परिणाम है। विकास में मुख्यत: तीन मानवतत्त्व पाये जाते हैं :

- प्रथम : मानव आवश्यकताओं को पूर्ण करना,
- द्वितीय : स्वसम्मान में बढ़ोतरी करना,
- तृतीय : मानव स्वतन्त्रता का आश्वासन(गारण्टी) प्रदान करना।

ये तीनों तत्त्व सर्वत्र विद्यमान होते हैं; क्योंकि विकास एक सापेक्षिक संकल्पना है जिसमें प्रगति में हुए लाभों का उचित वितरण सभी स्तरों में बराबर होना चाहिए। भौतिक एवं सामाजिक कल्याण के साथ-साथ आय और अवसरों का न्यायोचित वितरण भी शामिल है। ग्रामविकास का अभिप्राय गाँवों में रहनेवालों के रहन-सहन की स्थितियों में गुणात्मक सुधार करना है विशेषकर गरीबी, अशिक्षा और बुरे स्वास्थ्य से प्रभावित लोगों की स्थिति में सुधार आवश्यक है। ग्रामविकास का महत्त्व पंचायती राज के साथ-साथ बढ़ा है। ग्रामविकास के प्राथमिक उद्देश्य :

विवेकसम्मत विकास समिति (एसफोर्ड)

वि – विभिन्न संसाधनों एवं उनके विविध उपयोग में से
वे – वे संसाधन एवं तकनीकी चयन करके
क – कल्याण कार्य सम्पन्न करवाने में सहायक होना।
स – सर्वांगीण एवं चहुँमुखी, आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति
म – मय सामाजिक कुरीतियाँ एवं गरीबी उन्मूलन कर
त – तत्परता से सर्वजनहिताय में योगदान करना।

वि – विविध तकनीकी, नवीन विधियों को
का – काम में लेकर सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त करते हुए
स – सतत स्वरोज़गार प्रदान करने में मदद करना।

स – सभी ग्रामवासियों और समिति सदस्यों के सहयोग से
मि – मिल-जुलकर विवादों को समाप्त करते हुए
ति – तितर-बितर हो रही सामाजिक एवं आर्थिक संरचना में भाईचारे की भावना से विकासकार्य करवाने में सक्रिय भागीदारी निभाना।

1. रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और रोज़गार प्रदान कर जीवन स्तर को ऊपर उठाना,

2. ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादकता बढ़ाना तथा गरीबी कम करना.

3. लोगों को निर्णय एवं योजना प्रक्रिया में शामिल करना, प्रशासन का विकेन्द्रीकरण करना और उनको योजना एवं विकास की मुख्यधारा से जोड़ना,

4. समाज में सभी को एक समान अवसर प्रदान करना तथा सामाजिक न्याय दिलवाना,

5. सर्वजनहितार्थ के मूलमन्त्र को ध्यान में रखकर कार्य करना।

विकास की प्रगति का पता लगाने के लिए दो क्षेत्रों में विकास की तुलना करें और ध्यान रखें कि आजकल सकल राष्ट्रीय उत्पाद या घरेलू उत्पाद का विकास के सूचकों के रूप में प्रयोग करने की जगह **जीवन का भौतिक गुण सूचकांक** उपयुक्त माना जाता है। उसमें तीन मुख्य सूचक जैसे आयु की प्रत्याशा, शिशु मृत्युदर और साक्षरता शामिल है। इन तीनों सूचकों के संयुक्त सूचकांक को ही जीवन का भौतिक गुण सूचकांक कहा जाता है।

ग्रामीण विकास के मूल तत्त्व :

1. असमानता एवं निर्धनता का उन्मूलन,
2. लोगों के भौतिक कल्याण में वृद्धि,
3. सामाजिक स्तर, स्वास्थ्य, आवास कल्याण में वृद्धि.
4. प्रौद्योगिकी में वृद्धि व जीवन-सुधार के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं व सेवाओं की उत्पादन-क्षमता में वृद्धि,
5. संस्थागत ढाँचे के निर्माण का निर्णय लेने में सभी स्तरों का योगदान।

ग्रामीण विकास के पाँच मूल तत्त्वों की तरह पाँच

कृषिप्रधान भारत गाय और बैलों का विशेष रूप से ऋणी है। मात्र किसान ही नहीं अपितु दूध-घी और अनाज खाने वाली सभी जातियों के लोग उनके ऋणी हैं।

सौजन्य : श्रीमती तारा मंत्री, समाजसेवी, बैंकाक – ज्ञानकोश

भौतिक तत्त्व प्रकृति ने भी प्रदान किये हैं जैसे जल, वायु, भूमि, पर्यावरण एवं ऊर्जा। ये तत्त्व प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष ग्रामीण विकास को पूणरूपेण प्रभावित करते हैं।

1. **जल :** जल या तो वर्षा से प्राप्त होता है या भूमि से। वर्षा से प्राप्त जल का संग्रहण करना अत्यावश्यक है। जल संग्रहण क्षेत्र में पानी को इकट्ठा करना, बाँध बनाना, चेक डेम, एनीकेट और खेतों में मेड़ें बनाकर रोकना इत्यादि आता है। आजकल एक नारा दिया जा रहा है : **''गाँव का जल गाँव में''** और **''खेत का जल खेत में''**। जल संग्रहण क्षेत्र की संकल्पना इस दोहे से समझी जा सकती है:

पाणी उतरियो भाकरां, ढळग्यो ढाळां मांय।
के तो रोको मारगां, के ळेवां खेतां मांय॥

खेतों में भी समेकित खेती प्रणाली का महत्त्व सर्वोपरि है, क्योंकि :

समेकित खेती के पाँच तत्त्व खास।
पेड़, बगीचा, फसल, पशु अर घास॥

जल भण्डारण करके, समेकित खेती करके कृषि में जोखिम को कम किया जा सकता है। अगर फसल खराब हो जाय तो बगीचे से कुछ आय प्राप्त हो सकती है।

जल संग्रहण क्षेत्र में समेकित खेती से ग्राम विकास की गति बढ़ाई जा सकती है।

जल संग्रहण क्षेत्र के अलावा खेतों में भी पानी को इकट्ठा किया जाता है। गाँव में नाडा, नाडी, तालाब, पोखर इत्यादि भी जलभण्डारण के मुख्य साधन हैं। यहाँ तक कि पक्के मकानों की छतों पर बने टाँको में पेयजल के लिए वर्षा का पानी इकट्ठा किया जाता रहा है। भूमिगत जल को कुओं, ट्यूबवेल, हैण्डपम्पों, बावड़ियों आदि से निकाला जाता है। वर्षा का पानी बाँधों में इकट्ठा करके नहरों द्वारा खेतों में पहुँचाया जाता है। साथ-साथ गाँवों में भूमिगत जलस्त्रोतों का जीर्णोद्धार करके पेयजल समस्या का समाधान किया जाता रहा है। एनीकेट और पानी रोकने से भूमिगत जलस्तर बढ़ता है। यहाँ तक कि वर्षा के जल को अलग-अलग तकनीकों से खुले कुओं में डालकर जलस्तर बढ़ाया जाता है।

2. **वायु :** ग्रामीण विकास को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है वायु। वायु की दिशा, गति, दबाव का ज्ञान वर्षा के पूर्वानुमान लगाने में काम आता है। जल, वायु, तापक्रम, आर्द्रता, जल उड़ना, सूर्य ऊर्जा क्षमता नापने के लिए मौसम वेधशाला बनाकर पता लगाया जा सकता है। जिससे कृषक समय पर सही निर्णय ले सकते हैं। वायु ऊर्जा से विद्युत पैदा करना, उससे पम्प आदि चलाना सम्भव है। ये सारे कार्य पवन चक्की से सम्पादित होते हैं।

3. **भूमि :** भूमि का पर्याय मिट्टी है। भूमि की बनावट, संरचना, किस्में और उसकी उपयोगिता पर खेती का कार्य निर्भर है। जैसी मिट्टी होगी, वैसी उपज होगी। जलशोषक, बलुआ, चिकनी या भुभुरी इत्यादि मिट्टी के छिद्रों में भी वायु प्रवेश कर पौधों को प्राणदान देती है।

4. **पर्यावरण :** पर्यावरण का संरक्षण ही सफलता की कुंजी है उसे शुद्ध रखा जाय और प्रदूषण से बचाया जाय क्योंकि ये मानवों और जीव-जन्तुओं के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

5. **ऊर्जा :** आजकल परम्परागत एवं गैर परम्परागत ऊर्जा, दोनों ग्रामीण विकास की धुरी हैं। परम्परागत ऊर्जा मानवश्रम, पशुश्रम, मशीन ऊर्जा, ईंधन, तेल, गैस और पेट्रोल से, यहाँ तक कि समुद्री लहरों से प्राप्त कर विकास में काम ली जाती है। द्रुतगति से विकास के लिए सौर ऊर्जा से सौर हीटर, सौर कुकर, सौर पम्प, सौर विद्युत इत्यादि गैर परम्परागत ऊर्जा का उपयोग किया जाता है। भूमि की बनावट या उसके ऊबड़-खाबड़, ऊंचे-नीचे स्थल के हिसाब से पवन, जल, ऊर्जा का उपयोग निर्भर करता है।

ये पाँचों तत्त्व मानव कल्याण के लिए काम आते हैं। मगर बढ़ती जनसंख्या को देखते हुए सारे संसाधन पर्याप्त नहीं हैं। इनके साथ-साथ मानव कल्याण में स्वास्थ्य, शिक्षा, संस्कार, सेवाभाव व समर्पण मुख्य हैं। जिस क्षेत्र की मानव जाति में प्रचुर मात्रा में ये गुण पाये जाते हैं वहाँ विकास तीव्र वेग से होता है। शिक्षा विशेषकर महिलाओं में ज़रूरी है। अगर एक महिला पढ़ी-लिखी हो तो पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है। **बालिका शिक्षा पर विशेष ध्यान रखना ही भविष्य में महिला सशक्तीकरण की आधारशिला है।**

भय हमारी बुद्धि की हार है, हमारे आत्मविश्वास की हार है। मनुष्य सृष्टि का शृंगार है. किन्तु भयभीत मनुष्य तो सृष्टि की निकृष्टतम वस्तु है। भय एक मिथ्या काल्पनिक भ्रम है।

सौजन्य : डॉ. ओ.पी. व्यास, डॉ. (श्रीमती) उषा व्यास, महात्मा गांधी अस्पताल, जोधपुर

–शिवानन्द

मानव का सम्बन्ध पशुपालन से भी गहरा है। जब हल की पहली खोड़ निकली, तब सभ्यता का विकास हुआ। पशुपालन आज भी कृषि के साथ-साथ मुख्य आय का स्रोत है। ग्राम-विकास में पशु का योगदान उत्पादन बढ़ाने, बोझा ढोने इत्यादि में काम आता है। पशुपालन का खेती के साथ सम्पूरक सम्बन्ध है। दोनों प्राय: एक दूसरे पर निर्भर हैं। कृषि का उप-उत्पाद पशुओं के लिए खाद्य सामग्री है, मगर पशुओं से प्राप्त गोबर, मूत्र, खालें, हड्डियाँ कृषकों की आर्थिक स्थिति की सुधारक हैं। *गोबर महत्त्वपूर्ण जैविक खाद है। उससे आजकल गैस बनायी जाती है जो प्रकाश, ईंधन एवं विद्युत उत्पादन में भी काम आती है। गाय से प्राप्त 'पंचगव्य' मानव स्वास्थ्य के लिए अति उत्तम है। यह बहुत-सी शारीरिक बीमारियों के उपचार के काम आते हैं।*

> विकास को गतिशील बनाने के लिए पर्यावरण को बढ़ावा देना, वृक्षारोपण करना और गरीबी उन्मूलन योजनाओं को गम्भीरता से लागू करना होगा। हमारी विवेकसम्मत विकास समिति इन सबमें भागीदार बनकर भावी पीढ़ी को समर्पण के लिए प्रेरित करती है। हमारी समिति का यह तुच्छ प्रयास ग्रामविकास के यज्ञ में घृत का काम करेगा।

कृषि, पशुधन, वानिकी, बागवानी एवं घास के साथ-साथ कृषि एवं सिंचाई, सड़क, पेयजल, बिजली, अस्पताल (मानव एवं पशुओं का), बैंक, डाकघर इत्यादि इन बुनियादी सुविधाओं के विस्तार के साथ-साथ इस प्रदेश में मरु-विस्तार को रोकना, पर्यावरण संरक्षण करना, पेयजल समस्या से निजात पाना, पेयजल सिर्फ मानवों के लिए नहीं अपितु पशुधन के लिए भी अत्यावश्यक है। यहाँ सौर ऊर्जा का उपयोग ईंधन की बचत करता है। लघु एवं सीमान्त किसानों और खेतिहर मजदूरों का भेड़ - बकरी पालन भी आजीविका का साधन है । डेयरी व्यवसाय भी ग्रामीण विकास का अच्छा घटक है। इसमें महिलाओं का योगदान रहता है। महिलाएँ **स्वयं सहायता समूह** का गठन कर महिलाओं को स्वरोज़गार मिल सकता है। महिला दुग्ध सहकारी समितियाँ बड़े अच्छे ढंग से कार्य कर रही हैं।

हमारी समिति कृषि, शिक्षा, पशुपालन, ऊर्जा का प्रयोग, बागवानी,वानिकी, मौसम ज्ञान इत्यादि के लिए भावी पीढ़ी को तैयार कर रही है ; क्योंकि बच्चे सभी बातों को बहुत जल्द ग्रहण करते हैं। इस प्रयास से विकास की गति बढ़ेगी। अगर कृषक शिक्षित है तो खेती का लेखा-जोखा रखकर लाभप्रद फसलों से आय में बढ़ोतरी कर सकेगा। कृषकों को यहाँ पर शिविर लगाकर कृषि को व्यवसाय की तरह अपनाने में जानकारी दी जा रही है। कृषक शक्ति के उपासक है, मगर दूसरे व्यवसायों की तरह स्वस्तिक, गणेश एवं लक्ष्मी की पूजा न करके लोकदेवता में आस्था रखते हैं। विवेकसम्मत विकास समिति ने बाल स्वास्थ्य तथा उनके संस्कारों पर प्रथम चरण में ध्यान केन्द्रित किया है। बालकों को हस्तकलाओं जैसे : कागज़ की थैलियाँ, मिट्टी के खिलौने, मोमबत्ती, अगरबत्ती, चॉक बनाने के साथ-साथ कुटीर उद्योग की जानकारी दे रहे हैं। बालकों के बीच पशुपालन के साथ सब्जी, फल-फूल लगाने और उनके लाभ के बारे में गहन चर्चाएँ होती रहती हैं। यहाँ तक कि शैक्षणिक भ्रमण कराके भी इस ज्ञान में बढ़ोतरी की जा रही है। उन्हें बंजर भूमि में घास लगाने, सोनामुखी उगाने और पशुओं के चारे की समस्या समाप्त करने के बारे में जानकारी दी जाती है। ईंधन के महत्त्व को समझाया जाता है। सामाजिक वानिकी क्या है, उससे क्या-क्या फायदे हैं, यह बताया जाता है। इस प्रकार से बच्चों में ज्ञान, अभिरुचि एवं अभ्यास करवाकर उनमें बदलाव लाने की कोशिश की जा रही है।

ग्राम विकास में अवरोधक :

सबसे प्रथम गाँव का ढाणियों में बसना और ढाणियों का दूर-दूर होना, इस पर भी बढ़ती आबादी का अभिशाप ! आबादी बढ़ने के साथ ही खर्च बढ़ने से कम आयवालों की संख्या की अधिकता के कारण पूँजी-निर्माण धीमी गति से होता है। अगर थोड़ी बचत होती भी होगी तो सामाजिक रीति-रिवाजों (जैसे-जन्म, मरण, विवाह, गौना (मुकलावा) इत्यादि) में क्षमता से अधिक खर्च कर देने के कारण पूँजी-निर्माण की सम्भावना पर ही प्रश्नचिह्न लग जाता है। इनके साथ-साथ ये तुर्रा और कि

मनुष्यों का एक बहुत बड़ा शत्रु है। वह उनके शरीर में ही रहता है। उसका नाम है 'क्रोध'।

–महाभारत

सौजन्य : प्रोफेसर वी.डी. पुरोहित, प्राचार्य, एल.बी.एस. नर्सिंग संस्थान, जोधपुर

व्यसनों[1] पर पैसा पानी की तरह बहाना, बचत न करना और सामाजिक व धार्मिक त्योहारों पर खर्च करने से इससे किसानों की हालत बदलने का नाम नहीं लेती। इसके अलावा गाँव में मशीनों की मरम्मत करनेवाले का अभाव या मशीनों के कल-पुरज़े न मिलने के कारण शहर जाकर लाना महँगा पड़ता है। आपसी गुटबाजी, आपसी झगड़े, मुकदमाबाजी, कचहरी, पुलिस थाने एवं वकीलों के चक्कर लगाने से नुकसान स्वाभाविक है। इस महंगाई के जमाने में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की आवश्यकता पड़ती है। ईंधन पर्याप्त न होने से जंगलों की कटाई और जंगली जानवरों का शिकार अतिरिक्त आय के लिए ये सभी छोटी-मोटी बाधाएँ ग्राम विकास के सामने मुँह बाये खड़ी हैं। बेरोज़गारी, जात-पात, ऋण सुविधा का न होना इत्यादि भी अवरोधको का काम करते हैं।

विकास को गतिशील बनाने के लिए पर्यावरण को बढ़ावा देना, वृक्षारोपण करना और गरीबी उन्मूलन योजनाओं को गम्भीरता से लागू करना। सभी मिलजुलकर पूरा प्रयास करें और सरकारी योजनाओं का पूरा लाभ उठावें तो ग्राम-विकास द्रुत गति से होगा। इन सबका समाधान है प्रेम, भाईचारा, स्वास्थ्य, शिक्षा, संस्कार, सेवाभाव और समर्पण। समर्पण एक दूसरे के प्रति, गाँव के प्रति, राज्य के प्रति और अन्त में राष्ट्र के प्रति, ताकि ग्रामविकास में चार चाँद लग सके। हमारी विवेकसम्मत विकास समिति इन सबमें भागीदार बनकर भावी पीढ़ी को समर्पण के लिए प्रेरित करती है। इस समिति का यह तुच्छ प्रयास ग्राम-विकास के यज्ञ में घृत का काम करेगा।

हमसब विवेकसम्मत विकास के लिए कटिबद्ध हैं।

✍ **डॉ. मोहनलाल पुरोहित**

अध्यक्ष : एसफोर्ड

कृषि अर्थशास्त्री एवं पूर्व-प्रधान वैज्ञानिक : काजरी

सीतारामजी मन्दिर के सामने, कबूतरों का चौक, जोधपुर

1. चिलम, तम्बाकू, चावड़ी, अमलों री रै वांण।
औपर खरचो आकरो, मरण परण औसाण॥
मरण-परण औसाण, अणूतौ पीवै दारु।
करजौ बधियों जाय पीढ़ियाँ झुरसी मारु॥

जय गणेश

सिद्धि-विनायक, हे गणनायक, तेरी जय-जय गाऊँ।
तू ही मंगलदाता तेरे पद में शीश नवाऊँ॥
एकदन्त औ' वक्रतुण्ड तू तेरी महिमा न्यारी –
कृपा करो सौभाग्यविधाता दृष्टि खुले रतनारी।

तड़प रहा जग बड़ी व्यथा है, शान्ति-सुधा बरसाओ,
सर्वभूत जय मंगलदाता! जल्दी भू पर आओ,
घिरा चतुर्दिक् अन्धकार है, गूँज रहा है क्रन्दन –
ज्ञानविभा फैलाओ भू पर जयति भवानीनन्दन।

सम्मुख कष्ट अपार खड़े हैं, जागो हे वरदानी,
रुद्ध हुई जाती है सत्वर खोल मुखर कर वाणी,
खिले प्रकाश धरा पर नूतन, मिटे सकल अँधियारी-
रजकण महिमावान् बना है, मूसक अतुल सवारी।

विघ्न हरें, सब कष्ट कटें, यह धरती बने सुहावन,
शुभारम्भ तू शुभ प्रयत्न के तेरी गाथा पावन,
रोग-व्याधि सब मिटें, करें सब तेरा प्रतिपल वन्दन-
जय गणेश, जय सुख के दाता! जय-जय शंकरनन्दन!!

✍ **महोपाध्याय माणकचन्द रामपुरिया**

साभार : *'शिक्षा-एक यशस्वी दशक'*
(स्मारिका : श्री जैन विद्यालय, हावड़ा)

संसार में कोई किसी को उतना परेशान नहीं करता जितना कि मनुष्य के अपने दुर्गुण और उसकी दुर्भावनाएँ।
– श्रीराम शर्मा आचार्य

सौजन्य : डॉ. वी.एस. व्यास, शिक्षाविद्, जोधपुर